DATE :
PAGE NO. :

ऑडियो, विडियो रिकॉर्डिंग और कलाकार विवरण पत्र

फोल्डर नं:- 10 दिनांक 15/06/2021

ZOOM0027.WAV स्थान- बड़नावा चारणान् लखे की ढाणी

कलाकार का नाम - (ईदू खां) गायन/वादन

पिता का नाम - आकू खां

पता → गांव बड़नावा चारणान् तह० पचपदरा जिला बाड़मेर (राजस्थान) ट्रैक समयावधि - 29:00 मिनट

सहायक कलाकार

1

2.

ऑडियो रिकॉर्डिंग का समय

विशेष- कथा (इसरा - परमेशा - सांग जी गोड़)

विशेष-विवरण- यह कथा सांगजी गोड के जीवन पर आधारित है। सांग जी गोड़ जो की गांव की गायों को चरया करता था उसकी माँ बूढ़ी थी और वह एक समझदार व्यक्ति था। बात उस समय की है, जब दो कवि इसरो और परमेशरो गंगा नहाने के लिए निकले ते है। और रस्ते में शाम हो जाती है तो ये सांग जी गोड़ का पता पूछते हुए वहा पहुंच जाते है। और मुलाकात करते है सांग जी गोड़ की मां उनके लिए खाना लाती है, और वह दोनो रात भर सांग जी गोड़ के साथ वातावरण करते है।

सुबह जब ये रवाना होते है तो सांग जी गोड़ उन्हे केहते है की आप वापस आते समय मेरी कुटीया होते जाना मे तुम्हे एक छोटा सा तोफह देना चाहता हू (ओडणी) बस आप जब गंगा नहा कर वापस आओ तो मेरे से मिलकर जाना। ये दोनो हरि-द्वार के लिए निकल जाते है और सांग जी गोड भी अपनी गायो को चराने रवाना हो जाते है। दिन भर अपनी गायो को चराने के बाद जब ये गायो को नदी के किनारे पानी पिलाने जाता है उस समय एक गाय पानी मे डूब जाती है।

उस समय सांगजी गोड़ भी उस गाय की पूछ पकड़कर पानी में कूद जाते है। और बहुत दूर चले जाते है। उनका साथी उनकी मां को आकर बताता है की सांग जी तो पानी के साथ बह गये हैं उनकी मां जैसे-तैसे सब्र करती है। छः महीने बीत जाते है। और वह दोनो कवि भी गंगा नहा कर वापस आते है और सांग जी गोड़ की कुटीया पर रुकते हैं तो सांगजी गोड़ की मां उनके लिए ठहरने की व्यवस्था करती है और खाना लगाती है।

खाने पर बैठते समय वह दोनो सांगजी के बारे मे पुछते है। तो सांग जी की मां केहती है की आपके यहा से जाने के चार-पांच दिन बाद सांग जी तो मुझे छोड़ कर चले गये, रामजी को प्यारे हो गये। नदि में तिरने से उसकी मृत्यु हो गई, । तो इस समय ईसरो-परमेश्वरो केहते है कि आज का खाना हम सांग जी गोड़ के साथ ही खायेंगे।

फिर वह दोनो नदी के किनारे जा कर सांग जी गोड़ को आवाज देते है तो सांग जी गोड अपनी गाय को पकड़े हुए आ रहे है। उनको देखकर उनकी मां बहुत प्रसन्न होती है। और सांग जी से पुछती है की तु इतने दिन मुझे छोड़ कर कहा चला गया था। तो सांग जी कहते है कि मैं पानी में डूबा नहीं था। जब नदी का पानी सुखने लगा तो मैं भी घर के लिए रवाना हो गया और समय पर घर पहुँच गया।

फिर ये तीन एक साथ खाना खाते है और सांगजी गोड इन दोनों को (ओडणी) तोफह देते है और रवाना कर देते है। इस प्रकार थी सांग जी गेम गोड की कहानी।